Email: biovetinnovator@gmail.com Official Website: https://biovetinnovator.in/
Fueling The Future of Science… ISSN: 3048-8397

Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 8) AUGUST 2025

OPEN ACCESS WORLD ELEPHANT DAY - 12TH AUGUST POPULAR ARTICLE

प्राकृतिक खेती में पशुपालन द्वारा ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार सृजन समय की माँग

डॉ नरेंद्र कुमार*, डॉ महमूदा मलिक पूर्णिमा गुमास्ता****

**प्राध्यापक; **सहायक प्राध्यपक*

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, किशनगंज- 855107,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना

***Corresponding Author:** drnarendra9931004508@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16993494

Received: August 07, 2025
Published: August 12, 2025
© All rights are reserved by **नरेंद्र कुमार**

पशुपालन और कृषि एक दूसरे के पूरक है दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरा है। आज की कृषि में अधिक उत्पादन लेने के लिये अत्यधिक रसायनों तथा कीटनाशकों के उपयोग होता है जिसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति दिनों दिन छीन पड़ती जा रही है। रासायिनक कीटनाशको का दुष्परिणाम आज हम लोग अपने स्वास्थ्य, पशुओं के स्वास्थ्य तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तन के रूप में देख रहे है। आज कल कृषि में अत्यधिक कीटों का प्रकोप होता है, जिससे किसानों को रसायनिक कीटनाशको का अत्यधिक उपयोग करना पड़ता है, और कृषि की लागत मूल्य बढ़ जाती है। यदि किसान पशुपालन आधारित (गोमूत्र आधारित कीटनाशक) का उपयोग करते हैं तो प्रकृति में हम मित्र कीट को बचा सकते हैं तथा शत्रु कीट को फसल से दूर रख सकते है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक खेती (शून्य-बजट खेती या कृषि-पारिस्थितिकी) में मिट्टी की उर्वरता बढ़ाकर, लागत कम करके और स्थायित्व को बढ़ावा देकर पशुपालन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं। यह ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रोज़गार के महत्वपूर्ण अवसर भी पैदा करता है।

1. प्रमुख तरीके जिनसे पशुपालन प्राकृतिक खेती में रोज़गार सृजन में योगदान देता है:

- **विविध आजीविका के अवसर**:- डेयरी फार्मिंग: प्राकृतिक खेती जैविक डेयरी उत्पादन को प्रोत्साहित करती है, जिससे दूध संग्रहण, प्रसंस्करण (घी, दही, पनीर) और विपणन में रोज़गार पैदा होते हैं।
- **मुर्गी पालन और बकरी पालन**: छोटे पैमाने पर मुर्गी पालन और बकरी पालन से मांस और अंडे की बिक्री से आय होती है, जिसके लिए भोजन, सफाई और प्रबंधन हेतु श्रम की आवश्यकता होती है।
- **मधुमक्खी पालन**: एक कम निवेश वाला, उच्च लाभ वाला उद्यम जो शहद निष्कर्षण, मोम प्रसंस्करण और परागण सेवाओं में रोज़गार उत्पन्न करता है। मधुमक्खी पालन द्वारा अधिक फसलों का अधिक उत्पादन लिया जा सकता हैं।

2. जैविक इनपुट उत्पादन:

- **वर्मीकम्पोस्ट और गोबर-आधारित खाद:** मवेशी, बकरियाँ और मुर्गियाँ, जीवमृत, बीजामृत और पंचगव्य (प्राकृतिक उर्वरक और कीटनाशक) के लिए गोबर और मूत्र प्रदान करते हैं, जिससे खाद बनाने वाली इकाइयों में रोज़गार पैदा होता है।
- **बायो-गैस संयंत्र:** पशु अपशिष्ट का उपयोग बायोगैस उत्पादन में किया जा सकता है, जिससे स्थापना, रखरखाव और स्लरी प्रबंधन में रोज़गार मिलता है।

3. कृषि-पारिस्थितिकी पर्यटन और शिक्षा:

- **कृषि पर्यटन:** पशुधन को प्राकृतिक खेती के साथ जोड़ने से पर्यटक आकर्षित होते हैं, जिससे मार्गदर्शन, आतिथ्य और स्थानीय हस्तशिल्प में रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं।

- **प्रशिक्षण केंद्र:** कई प्राकृतिक खेती मॉडल (जैसे शून्य बजट प्राकृतिक खेती) में पशु-एकीकृत कृषि तकनीक सिखाने के लिए प्रशिक्षकों और विस्तार कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है।

4. मूल्यवर्धित उत्पाद और स्थानीय बाज़ार:

- **खाद और चारा उत्पादन:** गोबर के उपले, जैविक चारा और जैव-उर्वरक बेचने से सूक्ष्म उद्यम बनते हैं।
- **हस्तशिल्प और उप-उत्पाद:** पशु उप-उत्पाद (ऊन, चमड़ा, खाद के लिए हड्डियाँ) लघु उद्योगों को सहायता प्रदान करते हैं।

5. महिलाओं और युवाओं के लिए रोज़गार:

- **महिला सशक्तिकरण:** घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, डेयरी और खाद बनाने जैसी गतिविधियाँ महिलाओं द्वारा आसानी से प्रबंधित की जाती हैं, जिससे ग्रामीण रोज़गार में सुधार होता है।
- **युवा उद्यमिता:** युवा किसान मोबाइल पशु चिकित्सा सेवाएँ, जैविक मांस/डेयरी स्टार्टअप, या प्राकृतिक पशुधन प्रबंधन के लिए कृषि-तकनीकी समाधान शुरू कर सकते हैं।

पशुपालन, कृषि में बढ़ते लागत तथा घटते आमदनी की समस्या को आसानी से हल कर सकता है। आजकल पशुपालन सिर्फ दूध उत्पादन के लिए ही नहीं किया जाता है, बल्कि अन्य महत्वपूर्ण उत्पाद जैसे गोबर, गोमूत्र को प्राप्त करने के लिए भी किया जा रहा है। इसी गोबर और गोमूत्र को प्राकृतिक विधि द्वारा परिवर्तित कर पुनः गोबर खाद, वर्मीकम्पोस्ट, जीवामृत, बीजामृत, बायो गैस, इत्यादी में परिवर्तित कर पुनः खेतों में डाल दिया जाता है। इस प्रकार खेतों की उर्बरा शक्ति बरकरार रहती है। जोकि प्राकृतिक कृषि का एक अभिन्न अंग है। गोपालन के बिना प्राकृतिक कृषि की कल्पना नहीं की जा सकती है। राष्ट्रीय स्तर पर भी पशुपालन का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। सिर्फ दुग्ध का उत्पादन का योगदान हमारे राष्ट्रीय जीडीपी में 5% है।

छोटे और सीमांत किसानों के लिए बड़े स्तर पर एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाने की सलाह दी जा रही है। इस एकीकृत कृषि प्रणाली में भी पशुपालन का एक अपना अहम योगदान है। चाहे वह कृषि चक्र हो या आमदनी की बात हो पशुपालन से ज्यादा से ज्यादा आमदनी किसानों को प्राप्त हो रहा है। चाहे वह गोपाल आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली हो, बकरी पालन या तालाब आधारित मछली पालन एकीकृत कृषि प्रणाली हो।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि में पशुधन को उनकी प्राकृतिक जरूरतों के अनुसार आरामदायक और तनाव मुक्त जीवन प्रदान करने यह व्यवसाय लाभकारी सिद्ध हो रहा है। इस प्रणाली में पशु पोषण, पशु के स्वास्थ्य, पशु आवास और पर्यावरण के संदर्भ में प्रमाणित जैविक और बायोडिग्रेडेबल इनपुट के उपयोग को बढ़ावा देती है। प्राकृतिक पशुपालन में एंटीबायोटिक्स और अन्य रसायनों के उपयोग को कम करके खाद्य सुरक्षा, खाद्य गुणवत्ता और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना है। स्वस्थ जानवर दूध, मांस और अंडे जैसे स्वस्थ उत्पादों का उत्पादन करते हैं। पिछली शताब्दी से दवाओं और फसल सुरक्षा उत्पादों के उपयोग में तेजी से वृद्धि हुई है। इससे पशुधन उत्पादन को काफी बढ़ावा भी मिला है। परन्तु, पर्यावरण, जानवरों, और मानव स्वास्थ्यपर, इन रसायनों का काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इन रसायनों के कारण पशुपालन और कृषि कार्य में लागत मूल्य में भारी वृद्धि हो रही है तथा आमदनी में कमी हो रही है। इन रसायनों का प्रभाव से पशुओ और मनुष्यों में गंभीर बीमारियाँ हो रही हैं। साथ ही वातावरण में पाए जाने वाले मित्र कीट की संख्या में तेजी से कमी हो रही है। इस प्रकार जाने अनजाने किसान और पशुपालक अपने पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचा रहे हैं।

पशुपालन एवं प्राकृतिक कृषि एक जीवन पद्धति है। यह एक जीवन शैली है, और हमें प्राकृतिक रूप से कृषि क्रियाओं को संपादित करने के बाद जो अप्सिष्ठ बच जाते है उसे पशु खा कर मनुष्यों के लिए उत्पाद के रूप में दूध, मांस, अंडा और ऊन प्राप्ति होती है। हमारे किसान भाई पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को अपनाकर ना केवल संपूर्ण मानव जाति को भयंकर रोगों के प्रकोप से बचा सकते हैं, साथ-साथ प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं। जिससे भविष्य में होने वाले ग्लोबल वार्मिंग से बचा सकता जा सकता है। प्राकृतिक उत्पाद की माँग पूरी दुनिया में बहुत तेजी से बढ़ रही है और किसान भाई अधिक से अधिक लाभ भी कमा सकते हैं। हमारे देश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि एक सदाबहार कृषि पद्धति है, जो पर्यावरण, जल, वायु की शुद्धता एवं भूमि का प्राकृतिक रूप से संरक्षित करती है। पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि भूमि को लंबे समय तक कृषि योग्य बनाए रखने में सक्षम है, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि, वह विधि है, जिसमे प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों से ही जमीन की उर्वरा शक्ति को बनाए

रखते हुए कृषि का उत्पाद लिया जा सकता है। प्राकृतिक तरीके से ही शत्रु कीटों एवं रोग पर नियंत्रित किया जा सकता है।

प्राकृतिक कृषि में भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाए रखने के लिए फसल चक्र, हरी खाद, पंचामृत गोबर, कंपोस्ट, आदि का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। जिसे से मिट्टी में उपलबध जीवाणु पुनः जीबित हो जाते है।

आज संपूर्ण विश्व में जनसंख्या वृद्धि एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। बढ़ती हुई आबादी के साथ भोजन के आपूर्ति के लिए किसानों द्वारा अधिक से अधिक खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए जहरीले कीटनाशकों का उपयोग किया जा रहा है। इससे हमारे प्रकृति के इकोलॉजी सिस्टम प्रभावित हो रहा है। मृदा की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे कम होती जा रही है, साथ ही वातावरण में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। जिसके कारण हमारे स्वास्थ्य में दिनों दिन गिरावट आती जा रही है। पिछले 10 वर्षों में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों के अंधाधुंधे प्रयोग से हमारे पशुओं और मनुष्यों के स्वास्थ्य पर बहुत ही विपरीत असर पड़ा है। इसका असर पानी, भूमि और पर्यावरण पर भी स्पष्ट दिखाई देने लगा है। कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि, कहीं मित्र कीटों का कम संख्या में पाया जाना और शत्रु कीट की संख्या में अचानक से बहुत बढ़ जाना इत्यादि प्रमुख लक्षण है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण कृषि प्रणाली अपनाई जाती थी। जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान एक चक्र निरंतर चलता रहता था। हमारे पूर्वज प्राकृतिक इकोसिस्टम को बहुत अच्छी तरह से जानते और समझते थे। इको सिस्टम को बिना नुकसान पहुंचाए पहले पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि की जाती थी। जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होते थे।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि के मार्ग में बाधाएं:

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को अपनाने से शुरुआती समय में उत्पादन में कुछ गिरावट आ सकती है। देशी गाय को हरा चारा तथा कृषि से बचे अप्सिष्ठ से पालन पोषण कर दूध का उत्पादन किया जा सकता है। कम उत्पादन किसान सहन नहीं कर सकते हैं, इसीलिए पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को अपनाने के लिए उन्हें सरकार, कृषि विज्ञान केंद्र या स्वयंसेवक संस्थानों द्वारा अलग से प्रोत्साहन और प्रशिक्षण देना जरूरी है। देशी गाय में उचित पोषण के माध्यम से दूध उत्पादन के मात्रा को बढ़ाया जा सकता है। उचित पोषण में कम्पोस्ट द्वारा उगाये गए पौष्टिक हरे चारे, कृषि अप्सिष्ठ एबं प्राकृतिक जड़ी बूटी(शतवारी)शामिल है।

आधुनिक रसायनिक कृषि ने मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणुओं को लगभग नष्ट कर दिया है। इसको पुनः स्थापित करने में 3 से 4 वर्ष का स मय लग सकता है। यदि हम धीरे-धीरे रासायनिक कृषि से प्राकृतिक कृषि की ओर जाते हैं, तो हमारा मृदा का स्वास्थ्य, वातावरण, फसल उत्पादन उत्पादन उसी स्तर पर बना रह सकता है। धीरे धीरे रासायनिक कृषि पर किसानों कि निर्भरता कम होती चली जाएगी। इस से मृदा के स्वास्थ एवं पशु के स्वास्थ पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। पशु के उत्पादन को बरकरार रखना तथा पशु का स्वास्थ्य ठीक रहे एवं पशु आहार भी पर्यावरण के अनुकूल हो, यह सब पशु पोषण विशेषज्ञों के लिए एक बड़ी चुनौती है। गुणवत्तापूर्ण पशु उत्पादों को प्राप्त करने के लिए पशुओं को स्वस्थ रखना आवश्यक है। इसके लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होना आवश्यक है। जड़ी बूटियों तथा हर्बल औषधियों में पाए जाने वाले प्राकृतिक योगिक का उपयोग समग्र स्वास्थ्य को बढ़ाने में काफी मददगार हो सकता है, साथ ही पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाती हैं। उदहारण के लिये सहजन की पत्ती पशुवों को स्वस्थ रखने में मदद करता हैं साथ ही इसका पेड़ पर्यावरण के लिए भी बहुत अच्छा होता है। साथ ही पशुवों के पोषण की कई जरुरतों को पूरा करता है और कई बीमारियों के इलाज में भी कारगर है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं:

भारत सरकारए राज्य की सरकार ने विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा दे रही है तथा प्राकृतिक उत्पाद को बाजार से लिंक कर रही है। ताकि किसानों को इसका उचित मुनाफा मिल सके। इसमें स्थाई कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन. में परंपरागत कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाए बागवानी के विकास के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित जैविक कृषि नेटवर्क कार्यक्रम एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण प्रमुख योजनाएं है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि से रोजगार सृजन एवं धन उपार्जन:

शताब्दियों पहले, पशुपालकों ने प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए जड़ी बूटी का उपयोग कर अपने पशुओं को स्वस्थ रखा करते थे। आधुनिक फार्मास्युटिकल उद्योग से दवाओं के उपयोग में आसानी के कारण हमें अपने घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के ज्ञान को खोने का खतरा है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि का अंतिम लक्ष्य डेयरी फार्मिंग में एंटीबायोटिक्स और अन्य रसायनों के उपयोग को कम करके

खाद्य सुरक्षा, खाद्य गुणवत्ता और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना है। पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि एक बेहतर दुनिया बनाने में योगदान देता है। जिसमें दूध और अन्य पशुधन उत्पादों का उत्पादन स्थायी तरीके से किया जाता है। पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि में मिट्टी समृद्ध होती है, जानवर अच्छे तरह से रहते हैं, स्वस्थ दूध रसायनों के बिना प्राप्त होता हैं जिस से किसानों को अच्छी आय मिलती है।

पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि प्रणाली में पशुधन का एकीकरण खेती में महत्त्वपूर्ण भूमिका है और पारिस्थितिकी तंत्र के पुनर्चक्रण में मदद करता है। जीवामृत तथा बीजामृत जैसे इको-फ्रेंडली बायो-इनपुट गाय के गोबर व मूत्र एवं अन्य प्राकृतिक उत्पादों से तैयार किये जाते हैं।

शहरों से पर्यटक मानसिक तनाव को कम करने के लिए पशुपालन आधारित प्राकृतिक कृषि को देखने के लिए गाँवो की ओर जाते है। यह चलन आज के परिवेश में तेजी से पनप रहा है। गाय की पीठ थपथपना और उसके साथ सटकर बैठना या उसे गले लगा लेना, ये सब काउ कडलिंग थेरेपी का हिस्सा हैं तथा भविष्य में काउ कडलिंग थेरेपी किसानों को रोजगार देने के साथ-साथ एक आमदनी देने वाला जरिया बन सकता है।

प्राकृतिक खेती में पशुपालन रासायनिक उत्पादक सामग्री पर निर्भरता कम करता है, मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, और खेती से लेकर प्रसंस्करण और विपणन तक, रोज़गार के अनेक अवसर पैदा करता है। सरकारी योजनाएँ (जैसे भारत में परंपरागत कृषि विकास योजना , प्राकृतिक खेती के लिये कॉलेज कि स्थापना) ऐसी पहलों को और बढ़ावा देती हैं, जिससे यह ग्रामीण रोज़गार के लिए एक स्थायी मॉडल बन जाता है।

Citation: डॉ नरेंद्र कुमार, डॉ महमूदा मलिक, पूर्णिमा गुमास्ता. **(2025).** प्राकृतिक खेती में पशुपालन द्वारा ग्रामीण युवाओं के लिये रोजगार सजृन समय की माँग. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 8, pp. 28–31). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.16993494**